प्रारूपों की पुस्तिका
मंडल वर्ग

पं. दीनदयाल उपाध्याय
प्रशिक्षण महाभियान
2015

भारतीय जनता पार्टी
11, अशोक रोड, नई दिल्ली– 110001
फोन : 01123005700, फैक्स : 01123005787

आमुख

'पंडित दीनदयाल प्रशिक्षण महाभियान' के अंतर्गत हम मण्डल स्तर पर पहली बार प्रशिक्षण वर्ग कर रहे हैं। जिलों एवं प्रदेशों में तो वर्गों की हमारे यहां पुरानी परम्परा है। इन वर्गों की विषय–वस्तु वर्ग में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों तक ठीक से पहुंचे, इसके लिये विषयों के प्रारूप को इस पुस्तिका में समाहित किया है। विषय थोड़े विस्तार के साथ बिन्दुबद्ध किये गए हैं। विवेचन के साथ इनका यथोचित विस्तार होगा।

सत्र लेने वाले कार्यकर्ता इनका विस्तार एवं विवेचन वर्ग में करेंगे ही, लेकिन वर्ग में आनेवाले सभी कार्यकर्ताओं के पास स्थाई सामग्री के रूप में ये प्रारूप रहे, इस अपेक्षा से इस पुस्तिका का संयोजन किया गया है। एक उपयोगी साहित्य के रूप में यह सभी कार्यकर्ताओं के पास रहनी चाहिये।

पी. मुरलीधर राव
(राष्ट्रीय महासचिव)
प्रभारी
प्रशिक्षण महाभियान

अगस्त, 2015

विषय सूची

1. भारतीय जनता पार्टी का इतिहास एवं विकास 05

2. सैद्धांतिक अधिष्ठान 16

3. हमारा विचार परिवार 20

4. देश के सम्मुख चुनौतियां 24

5. वर्ग गीत 30

भारतीय जनता पार्टी का इतिहास एवं विकास

- भारत की आजादी के आन्दोलन को द्वि–राष्ट्र के विचार ने प्रदूषित कर दिया था। साम्प्रदायिक पृथकतावाद के तुष्टीकरण एवं राष्ट्रवाद की समुचित दृष्टि न होने के कारण नेताओं ने मजहब के आधार पर भारत का विभाजन स्वीकार कर लिया। विभाजन के सक्रिय विरोध के कारण कांग्रेस सरकार ने महात्मा गांधी की हत्या का झूठा बहाना बना कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को प्रतिबंधित कर दिया।
- डॉ॰ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने पूरे बंगाल को पाकिस्तान में मिलाने के खिलाफ आन्दोलन किया परिणामतः पाकिस्तान को आधा बंगाल ही मिला। महात्मा गांधी की सलाह पर डॉ. मुखर्जी को केन्द्रीय मंत्रीमंडल में शामिल किया गया था, लेकिन पाकिस्तान के साथ भारत की दब्बू नीति एवं वहां कि हिन्दुओं की रक्षा में उदासीनता को व्यक्त करनेवाले नेहरू–लियाकत समझौते के खिलाफ डॉ. मुखर्जी ने मंत्रीमंडल से त्यागपत्र दे दिया।
- इन दो पृष्ठभूमियों ने जनसंघ को जन्म दिया। रा.स्व.संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी (मा.स. गोलवलकर) से डॉ. मुखर्जी ने भेंट की, तथा जनसंघ के निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी। मई 1951 में यह प्रक्रिया प्रारंभ हुयी तथा 21 अक्टूबर 1951 को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अध्यक्षता में अ.भा. जनसंघ की स्थापना के साथ यह पूर्ण हो गयी। दिल्ली के राघोमल कन्या माध्यमिक विद्यालय में यह स्थापना हुयी। आयाताकर भगवा ध्वज झण्डे के रूप में स्वीकृत हुआ उसी में अंकित दीपक को चुनाव चिन्ह स्वीकार किया गया, इसी उद्घाटन सत्र में प्रथम आम चुनाव के घोषणापत्र को भी स्वीकृत किया गया।

- प्रथम आम चुनाव में जनसंघ को 3.06 प्रतिशत वोट प्राप्त हुये तथा डॉ. मुखर्जी सहित तीन सांसद चुनाव जीत कर आये। जनसंघ को राष्ट्रीय दल का दर्जा प्राप्त हुआ। सदन में डॉ. मुखर्जी के नेतृत्व में ''नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट' का निर्माण हुआ, अकालीदल, गणतंत्र परिषद्, हिन्दू महासभा, तमिलनाडु टोइलर्स पार्टी, कोमनवील पार्टी, द्रविड़ कजगम, लोक सेवक संघ तथा निर्दलीय मिलाकर 38 सांसद इस फ्रंट में थे (32 लोकसभा तथा 6 राज्य सभा)। इस प्रकार भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष डॉ. मुखर्जी देश के प्रथम अनौपचारिक नेता प्रतिपक्ष थे।
- 29 जून 1952 को जम्मू-मश्मीर की विधानसभा ने भारतीय संघ के अंतर्गत स्वायत्त गणराज्य का प्रस्ताव स्वीकार किया तथा 24 जुलाई को नेहरू-अब्दुल्ला समझौता हुआ। यह भारत में विलयित जम्मू-कश्मीर राज्य को विवादास्पद एवं पृथक करने का षडयंत्र था। इसके तहत वहां का अलग संविधान, अलग प्रधानमंत्री एवं अलग झण्डे की व्यवस्था हुयी। प्रजापरिषद् ने इसके खिलाफ आन्दोलन किया, भारतीय जनसंघ ने इसका समर्थन किया। संसद में डॉ. मुखर्जी ने इस षडयंत्र के खिलाफ प्रखर भाषण दिये। जम्मू-कश्मीर में आंदोलन तीव्र हो गया।
- 29-31 दिसम्बर 1952 को भारतीय जनसंघ का पहला अधिवेशन कानपुर में हुआ। पं. दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के महामंत्री बने। 'भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' को व्यक्त करने वाला 'सांस्कृतिक पुरूत्थान' प्रस्ताव दीनदयाल जी द्वारा प्रस्तुत किया गया। विचार धारा मूलक यह प्रथम प्रस्ताव था। 'राज्य पुनर्गठन आयोग की मांग की गयी।
- मार्च 1953 में कश्मीर पूर्ण विलय के लिये दिल्ली में सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। 11 मई को डॉ॰ मुखर्जी ने सत्याग्रहपूर्वक बिना परमिट में जम्मू-कश्मीर में प्रवेश किया, उन्हें बंदी बनाकर श्रीनगर ले जाया गया। जम्मू-कश्मीर में प्रवेश के लिये देश भर से 10750 सत्याग्रहियों ने भाग लिया। 23 जून को डॉ. मुखर्जी शहीद हो गये। सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया।

- परिणामतः 9 अगस्त को शेख अब्दुल्ला को जम्मू-कश्मीर प्रधानमंत्री पद से हटा कर बंदी बनाना पड़ा। अंततः परमिट सिस्टम भी समाप्त हुआ।
- 22 से 25 जनवरी 1954 को जनसंघ का दूसरा अधिवेशन बम्बई में सम्पन्न हुआ जहां 'स्वदेशी' के संकल्प का आह्वान किया गया। रूस की नकल पर बनी पंचवर्षीय योजना का विरोध किया गया।
- अंग्रेज तो 1947 में भारत से चले गये थे लेकिन, गोवा-दमन-दीव तथा पांडीचेरी अभी भी पुर्तगाल व फ्रेंच साम्राज्य के हिस्सा थे। जनसंघ ने इनकी आजादी का आंदोलन छोड़ा। जनसंघ के कार्यकर्ता श्री नरवने ने 22 जुलाई 1954 दादरा को मुक्त करवाया 29 जुलाई को नरवने ने ही नारोली द्वीप की मुक्ति का नेतृत्व किया। जनसंघ कार्यकर्ता हेमंत सोमान ने पणजी में पुर्तगाली सरकार के सचिवालय पर 15 अगस्त को तिरंगा झंडा लहरा दिया। देश भर में जनसंघ ने गोवा मुक्ति के लिये आन्दोलन किया। जनसंघ के अखिल भारतीय मंत्री श्री जगन्नाथ राव जोशी के नेतृत्व में 101 सत्याग्रहियों के जत्थे ने गोवा में प्रवेश किया। उन्हें बंदी बना कर प्रताड़ित किया गया। मध्य प्रदेश के श्री राजाभाऊ महाकाल एवं उत्तर प्रदेश के श्री अमीर चन्द गुप्त का बलिदान हो गया।
- शिक्षा व्यवस्था बदलने के आह्वान के साथ जनसंघ का तीसरा अधिवेशन 28 दिसम्बर-2 जनवरी 1954-55 जोधपुर में हुआ। कश्मीर एकीकरण के जननायक श्री प्रेमनाथ डोगरा, अध्यक्ष बने। 19-22 अप्रैल 1955 में चौथा अधिवेशन जयपुर में सम्पन्न हुआ। महान गणितज्ञ आचार्य देवा प्रसाद घोष अध्यक्ष बने। आचार्य घोष की अध्यक्षता में ही पांचवा अधिवेशन दिल्ली में सम्पन्न हुआ। संघात्मकता का तानाबाना बुनने के लिये राज्यों का निर्माण हो रहा था। क्षेत्रवादिता एवं हिंसा का नंगा नाच हुआ। जनसंघ ने जनपदों तक विकेन्द्रित 'एकात्म शासन' की मांग की। दिल्ली अधिवेशन में ही सम्प्रदायवाद के खिलाफ 'भारतीयकरण' का प्रस्ताव पारित हुआ तथा 1957 के महानिर्वाचन के लिये घोषणापत्र तैयार

किया गया।

- 8 अगस्त 1957 को भारतीय जनसंघ का पहला गयारह दिवसीय स्वाध्याय शिविर बिलासपुर में सम्पन्न हुआ।
- आचार्य देवाप्रसाद घोष की अध्यक्षता में ही 4-6 अप्रैल 1958 छठा अधिवेशन अम्बाला में हुआ। चुनाव सुधार के लिये संवैधानिक व्यवस्था की मांग की गयी। 26-28 दिसम्बर 1958 जनसंघ का 7वां ऐतिहासिक अधिवेशन पुनः आचार्य घोष की अध्यक्षता में बंगलोर में हुआ। 1957 के महानिर्वाचन से जनसंघ ने लोकसभा की चार सीटें जीतीं तथा मतदान प्रतिशत लगभग दुगुणा होकर 5.93 प्रतिशत हो गया।
- 10 सितम्बर 1958 में नेहरू-नून समझौता हुआ, परिणामतः जलपाईगुड़ी का बेरुबाड़ी यूनियन पाकिस्तान को सौंप दिया। बेरुबाड़ी को बचाने के लिये जनसंघ ने देशव्यापी आन्दोलन किया।
- 1959 में चीन की भारतीय सीमा में घुसपैठ के खिलाफ मुखर आवाज उठाई। तिब्बत की आजादी की मांग की। पूरे साल जन-जागरण के कार्यक्रम हुये।
- 27 जून से 6 जुलाई 1959 तक विधायक एवं सांसदों की आचार संहिता के लिये पूना में दस दिवसीय स्वाध्याय शिविर सम्पन्न हुआ।
- 23-25 जनवरी 1960 को जनसंघ का आठवां अधिवेशन श्री पीताम्बरदास की अध्यक्षता में नागपुर में संपन्न हुआ। चीनी आक्रमण के खिलाफ मुखरता, हिन्दी चीनी भाई-भाई के भ्रम के खिलाफ सरकार को सावधान करनेवाले कार्यक्रम चलते रहे। दिसम्बर 30-जनवरी 1, 1960-61, नौवां अधिवेशन श्री रामा राव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। 1962 के महानिर्वाचन के लिये घोषणापत्र तैयार हुआ। 10वां अधिवेशन भारत के महान भाषाविद् आचार्य रघुवीर की अध्यक्षता में दिसम्बर 29-31, 1962 को भोपाल में सम्पन्न हुआ। दुर्भाग्य से 14 मई 1963 को आचार्य रघुवीर की एक सड़क दुर्घटना में दुःखद् मृत्यु हो गयी, पुनः आचार्य देवाप्रसाद घोष को अध्यक्ष चुना गया। ग्यारहवां अधिवेशन

28-30 दिसम्बर 1963 को आचार्य देवा प्रसाद घोष की अध्यक्षता में अहमदाबाद में हुआ।

- 1962 में जनसंघ के लोकसभा में 14 सांसद विजयी हुये तथा मतदान प्रतिशत 6.44 रहा। जनसंघ के इतिहास में 1964 का वर्ष एक मील का पत्थर है। 10 से 15 अगस्त तक ग्वालियर में स्वाध्याय शिविर हुआ सिमें 'सिद्धांत और नीति' प्रलेख का प्रारूपण हुआ, जिसमें 'एकात्म मानववाद' अन्तर्निहित था। नवम्बर 1964 की कार्यकारिणी ने प्रारूप को स्वीकार किया तथा 23 से 26 जनवरी 1965 को श्री बच्छ राज व्यास की अध्यक्षता में हुये, विजयवाड़ा के बारहवें अ.भा. अधिवेशन में इसे अधिकृत रूप से पार्टी की विचारधारा घोषित किया गया। दिसम्बर 1964, जनसंघ ने अणुबम बनाने की मांग की।
- मार्च 1965 में पाकिस्तान ने कच्छ में कंजरकोट क्षेत्र पर कब्जा कर लिया व आक्रमण जारी रखा, भारत सरकार ने पाकिस्तान से समझौता करना चाहा, जनसंघ ने विरोध किया। जुलाई-अगस्त में जनसंघ ने देशव्यापी प्रदर्शनों की योजना की। देश भर में एक लाख स्थानों पर प्रदर्शन हुये तथा 16 अगस्त को तब तक के भारत के राजनैतिक इतिहास का सबसे बड़ा प्रदर्शन कच्छ समझौते के खिलाफ देश भर के पांच लाख लोगों ने दिल्ली में आकर किया, नारा था 'फौज न हारी कौम न हारी, हार गयी सरकार हमारी'।
- प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को इससे सम्बल मिला वे युद्ध सिद्ध हो गये। एक सितम्बर को भारत-पाक युद्ध प्रारम्भ हो गया। जनसंघ ने सरकार व सेना के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर काम किया, भारत की सेनायें विजय हुयी। रूस की मध्यस्थता पर युद्ध विराम हो गया, ताशकंद में शिखर सम्मेलन तय हुआ, जनसंघ ने विरोध किया। ताशकंद में शास्त्री जी विजयी क्षेत्रों को वापस पाकिस्तान को सौपने के समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये, रात्रि में ही हृदय गति रूकने से उनकी मृत्यु हो गयी। भारतीय जनसंघ ने ताशकंद घोषणा का मुखर विरोध किया। संसद के समक्ष बड़ा प्रदर्शन किया।
- अप्रैल 1966 में प्रो. बलराज मधोक की अध्यक्षता में

जनसंघ का तेरहवां अ.भा. अधिवेशन जालंधर में हुआ। 1967 में चतुर्थ आम चुनाव हुये। जनसंघ अब कांग्रेस के बाद नम्बर दो का अ.भा. राजनैतिक दल बन गया। लोकसभा में हमारे 35 सदस्य विजयी हुये तथा 9.41 प्रतिशत वोट प्राप्त हुये। विधानसभाओं में भी जनसंघ क्रमांक दो का अ. भा. दल बन गया था। देश भर में हमारे 268 विधायक जीते थे।

- मार्च 1967 को पहली गैर कांग्रेस सरकार बिहार में बनी, जनसंघ इसमें शामिल था क्रमशः पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा तथा मध्यप्रदेश में भी संविद सरकारें बनी, सभी सरकारों में जनसंघ सांझीदार था।
- दिसम्बर 26-30, 1967 कालीकट में जनसंघ का चौदहवां अ.भा. अधिवेशन हुआ। महामंत्री के नाते जिनके मार्गदर्शन जनसंघ पुष्पित व पल्लवित हो रहा था पं. दीनदयाल उपाध्याय को पार्टी ने अपना अध्यक्ष चुना। दीनदयाल का ऐतिहासिक अध्यक्षीय भाषण हुआ। नेपथ्य में रह कर काम करने वाला नेता, अब दुनियां की नजर में आ गया, नजर लग गयी, 11 फरवरी 1968 को दीनदयाल जी शहीद कर दिये गये, यह देश की राजनीति पर वज्राघात था।
- 13 फरवरी 1968 को श्री अटल बिहारी वाजपेयी जनसंघ के अध्यक्ष चुने गये। 8-11 जुलाई को देश में पहला अखिल भारतीय महिला स्वाध्याय शिविर नागपुर में सम्पन्न हुआ। 25-27 अप्रैल 1969 को जनसंघ का पंद्रहवां अधिवेशन बम्बई में हुआ श्री अटल बिहारी वाजपेयी पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुये। यही वह अधिवेशन था जहां नारा लगा 'प्रधानमंत्री की अगली बारी अटल बिहारी-अटल बिहारी।' 2-8 जुलाई को रायपुर में अ.भा. स्वाध्याय शिविर हुआ।
- 28-30 दिसम्बर 1969 को जनसंघ का 16वां अ.भा. अधिवेशन श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में पटना में सम्पन्न हुआ। कांग्रेस, कम्युनिस्ट तथा मुस्लिम लीग के गठबंधन के खिलाफ देश को चेतावनी 'तीन तिलंगे-करते दंगे'। देश भर में नारा लगा। पटना में ही 'स्वदेशी प्लान' की घोषणा हुयी। पुनः भारतीयकरण का नारा लगा। जुलाई 1970 को 'सम्पूर्ण रोजगार के लिये योजना' की घोषणा हुयी।
- जनवरी 1971 में महानिर्वाचन के लिये 'गरीबी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा' शीर्षक से घोषणापत्र जारी हुआ। संविद सरकारों की दलबदलू राजनीति एवं इन्दिरा गांधी द्वारा कांग्रेस के विभाजन ने देश की राजनीति को गरमा दिया। गैर-कांग्रेसी दलों के गठबंधन का हिस्सा था जनसंघ, अपनी स्थापना के बाद पहली बार जनसंघ पीछे आया। संसद में उसकी सांसद संख्या 35 से घट कर 21 रह गयी, मत प्रतिशत भी घट गया। श्रीमती इन्दिरा गांधी को ऐतिहासिक विजय प्राप्त हुयी।
- दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया, बांगला देश युद्ध प्रारम्भ हो गया, पुनः जनसंघ ने सेना व सरकार के साथ कंधे से कंध मिला कर काम किया, भारत की विजय हुयी, बंगला देश का निर्माण हुआ। बंगला देश को मान्यता देने के लिये जनसंघ ने दिल्ली में बड़ा प्रदर्शन किया। 2 अप्रैल को जनसंघ 'दूसरा ताशकंद नहीं' दिवस मनाया।
- दलितों के खिलाफ हुयी उत्पीड़न की कार्यवाई के खिलाफ जनसंघ अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी ने बम्बई के हुतात्मा चौक पर सांकेतिक अनशन किया।
- युद्ध विजय के बाद हुये 'शिमला समझौते' का जनसंघ ने विरोध किया। राजस्थान की सीमा पर गडरा रोड शहर को पुनः पाकिस्तान को लौटाये जाने के खिलाफ गडरा रोड में जाकर श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने सत्याग्रह किया। शिमला समझौते के खिलाफ संसद के समक्ष विशाल प्रदर्शन। 3 अगस्त को सियाल कोट सेक्टर में श्री जगन्नाथ राव जोशी ने सत्याग्रह किया। सुईगाम (गुजरात) में डॉ. भाई महावीर ने सत्याग्रह किया।
- 15 अगस्त को श्री अरविंद शताब्दी को जनसंघ ने 'अखण्ड भारत दिवस' के रूप में मनाया।
- 1971 की विजय ने श्रीमती इन्दिरागांधी को मदांध कर दिया। भ्रष्टाचार अहमन्यता एवं दमन उनके शासन के पर्याय बन गये। दिसम्बर 1972 को श्री लाल कृष्ण आडवाणी की

अध्यक्षता में जनसंघ का 18वां अधिवेशन कानपुर में हुआ। गुजरात में 'नवनिर्माण आन्दोलन एवं बिहार में 'समग्र क्रांति' आन्दोलन से देश दोलायमान हो गया। बाबू जयप्रकाश नारायण आन्दोलन के नेता बने। आन्दोलन के अग्रणी दस्ते में अ.भा. विद्यार्थी परिषद् नेतृत्व कर रहा था। जनसंघ आन्दोलन में साथ था। श्री नानाजी देशमुख की जे.पी. को आन्दोलन में लाने के संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका रहा। जनसंघ ने दूसरी बार अध्यक्ष बने श्री लालकृष्ण आडवाणी जे. पी. को जनसंघ के दिल्ली अ.भा. अधिवेशन (19वां 7 मार्च 1973) में लेकर आये। जे.पी. ने कहा "यदि जनसंघ फासिष्ट है तो मैं भी फासिष्ट हूँ।"

- गुजरात में हुये उपचुनाव में कांग्रेस हर गयी तथा श्री राजनारायण की याचिका पर इलाहाबाद हाईकोर्ट श्रीमती गांधी का चुनाव निरस्त कर उन्हें चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित कर दिया। 25 जून 1975 की मध्यरात्रि देश में आपातकाल की घोषणा हुई, लोकतंत्र निरस्त कर दिया गया। सभी नेता या तो मीसाबंदी बना लिये गये या भूमिगत हो गये। रा.स्व.संघ प्रतिबंधित हो गया। अगले वर्ष महानिर्वाचन होना था, संविधान में संशोधन कर श्रीमती गांधी ने लोकसभा का कार्यकाल एक साल बढ़ा दिया, परिणामतः चुनाव नहीं हुये।
- बाबू जयप्रकाश नारायण ने लोक संघर्ष समिति का दायित्व श्री नानाजी देशमुख को सौंपा। देश भर में व्यापक सत्याग्रह हुआ, लक्षावधि लोग जेलों में चले गये। जनसंघ के कार्यकर्ता एवं संघ के स्वयंसेवक इस कार्य में अग्रिम पंक्ति में रहे। 1977 में चुनाव हुये, भारत में हुयी यह मौन क्रांति थी, कांग्रेस ही नहीं स्वयं श्रीमती इन्दिरागांधी व उनके पुत्र श्री संजय गांधी भी चुनाव हार गये। इन चुनावों में कांग्रेस के सामने जनता पार्टी थी। जय प्रकाशजी के नेतृत्व में भारतीय जनसंघ, समाजवादी पार्टी, भारतीय लोकदल एवं संगठन कांग्रेस ने मिलकर यह सांझी पार्टी बनायी थी। चुनाव के बाद 23 मार्च 1977 को आपातकाल की समाप्ति की घोषणा हुई, आपातकाल भी हटा दिया गया। लेकिन अब

जनसंघ का विलय जनतापार्टी में हो गया था। जनसंघ के तीन नेता जनता पार्टी सरकार में शामिल हुये।

- जनता पार्टी सत्तालोलुप आपसी स्पर्धा की शिकार हो गयी। वर्चस्व की लड़ाई में जनसंघ के कार्यकर्ताओं के खिलाफ 'दोहरी सदस्यता' का मुद्दा उठाया गया। जनसंघ के लोग या तो जनतापार्टी छोड़े या फिर संघ से अपने रिश्ते समाप्त करें। इस मुद्दे पर जनसंघ के नेताओं ने जनता पार्टी छोड़ दी तथा 6 अप्रैल 1980 में पंच निष्ठाओं के आधार पर 'भारतीय जनता पार्टी' का गठन हुआ।
- 1980 का लोकसभाई उपचुनाव श्रीमती गांधी जीत चुकी थी। जनता पार्टी के टूटने के बाद पुनः गैर–कांग्रेसी दलों में कांग्रेस का मुकाबला करने के लिये गठबंधन की राजनीति के प्रयत्न हुये, जनसंघ के समय 'दूध से जले हमारे नेता फूँक–फूँक कर कदम रखने लगे तथा तय किया कि हम अब अपनी पहिचान समाप्त करनेवाला कोई गठबंधन नहीं करेंगे। 31 अक्टूबर 1984 को श्रीमती गांधी के एक अंगरक्षक ने उनकी हत्या कर दी। व्यापक सिक्ख विरोधी दंगे हुये। जनसंघ एवं संघ कार्यकर्ताओं ने उस हर प्रयत्न को विफल करने में सक्रियता निभाई जो हिन्दू–सिक्ख घृणा फैलाते थे। राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने 31 अक्टूबर को ही श्री राजीव गांधी को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई। लोकसभा के चुनाव घोषित हुये। श्रीमती गांधी के प्रति 'सहानुभूति की लहर' में चुनाव बह गये। भारतीय जनता पार्टी का यह पहला चुनाव था, उसे केवल दो सीटें प्राप्त हुयी।
- पार्टी में जबरदस्त आत्मालोचनात्मक बहस हुयी। श्री कृष्ण लाल शर्मा के संचालन में एक कार्यदल गठित हुआ, कार्यदल ने अनुशंसा की कि 'एकात्म मानववाद' को पुनः भाजपा की मूल विचारधारा घोषित की जाये। परिणामतः अक्टूबर 1985 में गांधी नगर में आयोजित पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने उसे भाजपा के संविधान में जोड़ा। भाजपा को 'कार्यकर्ता आधारित जनसंगठन'; बनाने का संकल्प व्यक्त किया गया। 1986 में भाजपा की अध्यक्षता का दायित्व श्री लालकृष्ण आडवाणी पर आया।

- श्री राजीव गांधी काफी लोकप्रियता प्राप्त कर रहे थे; 'मिस्टर-क्लीन' की उनकी छवि थी। भाजपा राजनीति के हांसिये पर आ गयी थी। लेकिन इसमें वास्तविकता नहीं थी। 1987 में ही बोफोर्स काण्ड उजागर हो गया, उनके वरिष्ठ मंत्री वी.पी. सिंह ने विद्रोह कर दिया। 'मिस्टर क्लीन' की छवि ध्वस्त हो गयी।
- शाहबानों के केस में उनकी अल्पसंख्यक वोट बैंक राजनीति का पर्दाफाश हो गया। भाजपा के कार्यकर्ताओं ने इस विषय पर जम कर जनजागरण किया, पुनः 'समान नागरिक संहिता' की मांग की। जनवरी 1988 में भाजपा ने राजीव गांधी के त्यागपत्र व मध्यावधि चुनाव की मांग की। देश भर में सत्याग्रह हुआ। 3 मार्च 1988 को पुनः श्री लाल कृष्ण आडवाणी भाजपा के अध्यक्ष चुने गये। अगस्त 1988 में राष्ट्रीय मोर्चे का गठन हुआ, एन.टी. रामाराव अध्यक्ष एवं वी. पी. सिंह संयोजक बने। इसी में से 'जनता दल' का उद्भव हुआ।
- 25 सितम्बर 1989 को भाजपा व शिवसेना का गठबंधन हुआ। चुनाव परिणाम अपेक्षा के अनुकूल आये। राजीव गांधी की सरकार सत्ता के बाहर हो गयी। 1984 में जहां भाजपा को 2 सीटें मिली थी, अब वे बढ़ कर 86 हो गयी। इन चुनावों में बोफोर्स के मुद्दे के अलावा भाजपा ने अपना विचार व्यक्त किया 'सब के लिये न्याय, तुष्टीकरण किसी का नहीं।' श्री लालकृष्ण आडवाणी पहली बार लोकसभा में गये।
- जून 1989, पालनपुर (हिमाचल प्रदेश) श्री राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने रामजन्म भूमि आन्दोलन के समर्थन का निर्णय लिया। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का यह ज्वलंत मुद्दा था। छद्म धर्मनिरपेक्षता बनाम वास्तविक सर्वपंथ सम्भाव का यह युद्ध था। 25 सितम्बर दीनदयाल जयंती से आडवाणी की राम रथ यात्रा सोमनाथ से प्रारम्भ हुयी, 30 अक्टूबर को इसे अयोध्या पहुंच कर 'कार सेवा' में सहभागी होना था। 'रथयात्रा' को मिला जन-समर्थन अद्भुत था।
- 23 अक्टूबर को बिहार के समस्तीपुर में यात्रा को रोक दिया गया, आडवाणी जी वहां पांच सप्ताह बंदी रहे। सब सरकारी

प्रतिबंधों को तोड़ कर 30 अक्टूबर को कार सेवा हुयी। वी. पी. सिंह सरकार गिर गयी। चन्द्रशेखर प्रधानमंत्री बने उन्होंने अयोध्या मुद्दे को सुलझाने में असफल किन्तु ईमानदार प्रयत्न किये। 7 महीनों में ही राजीव गांधी ने उनकी सरकार गिरा दी। जुलाई 1991 उत्तर प्रदेश राज्य विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत हुयी। छद्म धर्मनिरपेक्षता पराजित हुयी। श्री कल्याण सिंह मुख्यमंत्री बने। लोकसभा के चुनाव के दौरान राजीव गांधी की हत्या हो गयी, कांग्रेस को सहानुभूति का लाभ मिला। भाजपा आगे बढ़ी उसकी सीटें 86 से 119 हो गयी। पी.वी. नरसिंहराव के नेतृत्व में कांग्रेस सरकार बनी। राममंदिर का मसला उलझता ही गया, 6 दिसम्बर 1992 की कार सेवा में विवादित बाबरी ढ़ांचा ढह गया।

- सन् 1996, 1998 एवं 1999 में तीन लोकसभा चुनाव हुये भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बन कर उभरी। श्री अटल बिहारी वाजपेयी पहले 13 दिन, फिर 13 महीने और बाद में साढ़े चार साल भारत के प्रधानमंत्री रहे। यह सत्ता केवल भाजपा की नहीं एन.डी.ए. की थी। 2004 का चुनाव एन.डी.ए. हार गया।
- 10 साल पार्टी ने विपक्षी की सक्रिय और शानदार भूमिका निभाई। 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में पहली बार भाजपा के पूर्ण बहुमत की सरकार बनी, जो आज 'सब का साथ सब का विकास' उद्घोषणा के साथ गौरव सम्पन्न भारत का पुनर्निमाण कर रही है। श्री अमित शाह के नेतृत्व में लगभग 11 करोड़ सदस्यों वाली विश्व की सबसे बड़ी राजनैतिक पार्टी बन गयी है।

'भारत माता की जय'

सैद्धांतिक अधिष्ठान

- हमारी पार्टी का अधिष्ठान कोई व्यक्ति या नेता विशेष नहीं है, न परिवार या वंश तथा न ही जाति एवं मजहब वरन् हमारा अधिष्ठान सिद्धांत में है।
- हमारे सिद्धांत की अभिव्यक्ति 'भारत माता की जय' उद्घोष से होती है। यह उद्घोष हमारे सिद्धांत बीजभूत आधार हैं। इसी लिये हमको राष्ट्रवादी कहा जाता है। भारत (भूमि) माता (संस्कृति) तथा जय (जनाकांक्षा) को व्यक्त करते हैं 'भू, जन एवं संस्कृति के संघात से राष्ट्र उत्पन्न होते हैं' इसी लिये 'देश भक्ति' हमारे कार्य का आधार है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में हमारा विश्वास है। राजनैतिक साम्राज्यवाद एवं पृथकतावाद के विचार 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के विरोधी हैं।
- 'भारत विभाजन' का सक्रिय विरोध करने वाला एकमात्र संगठन था राष्ट्रीय स्वंसेवक संघ। भारत विभाजन से बंगाल को बचाने वाले महापुरूष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी थे। संघ के सरसंघचालक श्री गुरुजी (मा. स. गोलवलकर) एवं डॉ. मुखर्जी के आपसी परामर्श के बाद भारतीय जनसंघ की स्थापना हुयी। विभाजन की छाया से जम्मू और कश्मीर को बचाने एवं भारत में उसका सम्पूर्णतः विलय करवाने के आन्दोलन में डॉ. मुखर्जी शहीद हो गये। परिणामतः जम्मू और कश्मीर आज भारत का अभिन्न अंग है।
- देश की अखण्डता के लिये भारतीय जनसंघ ने बहुत आंदोलन

किये, जिनमें महत्वपूर्ण हैं बेरूबाड़ी आंदोलन, गोवा मुक्ति आंदोलन (गोवा में जनसंघ के अनेक कार्यकर्ताओं का बलिदान हुआ, जिनमें मध्यप्रदेश के राजाभाऊ महाकाल तथा उ.प्र. के अमीरचंद गुप्ता प्रमुख हैं)। कच्छ करार विरोधी आंदोलन एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री की असामयिक मृत्यु से कलंकित ताशकंद समझौते के खिलाफ आंदोलन रेखांकनीय है। राष्ट्रीय अखण्डता हमारे लिये राजनैतिक नारेबाजी का नहीं वरन् हमारी श्रद्धा का विषय है।

- 1947 में हम अंग्रेजों से मुक्त हो गये लेकिन अंग्रेजियत किंवा पाश्चात्य विचारों से हम मुक्त नहीं हो पाये। सोवियत संघ प्रेरित समाजवादी केन्द्रीकरण के अधिष्ठान पर बनी पंचवर्षीय योजनाओं का विरोध करते हुये जनसंघ ने 'स्वदेशी अर्थव्यवस्था' का आग्रह किया जिसका आधार था 'आर्थिक लोकतंत्र' एवं 'विकेन्द्रीकरण' दीनदयाल जी ने इसे 'अर्थायाम' कहा।
- पाश्चात्य समाजवाद एवं पूंजीवाद की बहस में पड़ी राजनीति को भारतीय जनसंघ ने नयी दिशा दी, 1965 विजयवाड़ा में 'एकात्म मानववाद' को अपना विचार घोषित किया।
- एकात्म मानववाद का विचार व्यक्ति व समाज की एकात्मता, समाज एवं सृष्टि या प्रकृति की एकात्मता तथा अंततः भौतिकता एवं अध्यात्मिकता की एकात्मता का प्रणयन करता है एवं आग्रह करता है कि समाज इस एकात्मता का अनुभव कर इसे देश की राजनीति में प्रतिबिम्बित करे। व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि व परमेष्ठी की एकात्मता मानव के अस्तित्व में निगड़ित है।
- पाश्चात्य 'थियोक्रेसी' की प्रतिक्रिया में उत्पन्न हुये 'सेक्युलरिज्म' की भी भारतीय राजनीति अनुगामिनी बन रही थी। भारत में न कभी थियोक्रेसी थी, न हो सकती है। भारतीय संस्कृति 'पंथ निरपेक्ष' या 'सर्व धर्म समभाव' की संस्कृति है। भारतीय राजनैतिक दलों के 'सेक्युलरिज्म' को मा. लालकृष्ण आडवाणी ने अपनी राम-रथ यात्रा के समय 'सूडो सेक्युलरिज्म'

नाम दिया था। हम असाम्प्रदायिक 'धर्म राज्य' के समर्थक हैं। 'धर्म राज्य' के निकट का आधुनिक शब्द पद है 'संवैधानिक स्व-राज्य'।

- ♦ मानव द्वारा खोजी गयी शासन व्यवस्थाओं लोकतंत्र ही सर्वमान्य है, इसे श्रेष्ठता तक पहुंचाना है। इसके लिये दीनदयाल जी ने 'लोकतंत्र का भारतीयकरण' एवं 'लोकमत परिष्कार' की अवधारणाओं का विवेचन किया।
- ♦ आपातकाल की दुरूभिसंधि ने भारत के लोकतंत्र को लील लिया था। लोकतंत्र की रक्षा के लिये बाबू जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में प्रचण्ड आंदोलन हुआ। लोकतंत्र पुनः बहाल हुआ, लेकिन जो राजनैतिक घटना चक्र चला उसमें सांझी राजनीति की आवश्यकता महसूस की गयी तथा भारतीय जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया। इस तथाकथित सांझी राजनीति पर सत्ता राजनीति हावी हो गयी, जनसंघ के सिद्धांतवादी कार्यकर्ता सत्तावादियों को चुभने लगे। जनता पार्टी टूटी, जनसंघ पुनः भारतीय जनता पार्टी के रूप में प्रस्थापित हुआ। भाजपा ने अपने प्रथम अधिवेशन के सैद्धांतिक रूप में 'पंच निष्ठाओं' की घोषणा की :

1. राष्ट्र की एकता तथा एकात्मता के प्रति निष्ठा;
2. लोकतंत्र के प्रति निष्ठा;
3. गांधीवादी आर्थिक दृष्टिकोण-समता युक्त एवं शोषण मुक्त अर्थव्यवस्था के प्रति निष्ठा;
4. सर्व धर्म समभाव या सकारात्मक पंथ निरपेक्षता के प्रति निष्ठा;
5. मूल्याधिष्ठित राजनीति में निष्ठा।

- ♦ पंच निष्ठाओं के सैद्धांतिक आधार पर भारतीय जनता पार्टी का निर्माण हुआ। समय के साथ यह महसूस किया गया कि भारतीय संस्कृति की मूल निष्ठा को व्यक्त करने वाला समग्र विचार जो भारतीय जनसंघ ने 1965 में विजयवाड़ा में 'एकात्म मानववाद' के रूप में स्वीकार किया था वह पुनः

भाजपा को भी स्वीकार करना चाहिये कि अतः 1985 की राष्ट्रीय परिषद् ने 'एकात्म मानववाद' को अपना मूलभूत सिद्धांत स्वीकार किया।

- ♦ एक राजनैतिक दल के नाते सत्ता या विपक्ष का दायित्व संभाल कर, संवैधानिक व्यवस्थाओं का उपयोग करना हमारा 'साधन' है तथा समाज को सैद्धांतिक अधिष्ठान पर खड़ा करना हमारा 'साध्य' है। जितना हम इस साध्य-साधन विवेक से काम करेंगे हमें व्यावहारिक कार्य योजना प्राप्त होती चली जायेगी। राजनीति की सिद्धांतहीन गतिशीलता अराजक होती है तथा अंततः देश का नुकसान करती है। हम सदैव याद रखते हैं, 'भारत माता की जय' और 'वन्दे मातरम्'। हम राष्ट्रीय अखंडता के पुजारी हैं अतः हमारा नारा है 'जहां हुये बलिदान मुखर्जी - वह कश्मीर हमारा है।'

'भारत माता की जय'

❖❖❖

हमारा विचार परिवार

- सन् 1925 विजयदशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना नागपुर में हुयी। संघ का विश्वास भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रीयता में है, भारतीयता या हिन्दुत्व इस राष्ट्रीयता का आधार है। सत्तावादी राजनीति से संघ को परहेजे है, संघ राष्ट्रभक्त अन्तःकरणों का निर्माण करता है।
- विश्व का यह सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन, हर विरोध के बावजूद क्रमशः आगे बढ़ता रहा। पहले संघ अंग्रेज की आंख में खटकता था, बाद में कांग्रेस की सरकार ने भी संघ पर प्रतिबंध लगाया, क्योंकि कांग्रेस ने मजहब के आधार पर देश का विभाजन स्वीकार किया था, संघ इसका प्रखर विरोधी था।
- संघ अपने को सम्पूर्ण समाज का संगठन मानता है, वह किसी पंथ, जाति, भाषा, क्षेत्र या दल का हिमायती या विरोधी नहीं है। भारत की संस्कृति के अधिष्ठान पर भारत का पुनःनिर्माण हो, इसके लिये संघ के स्वयंसेवक समाज के सभी क्षेत्रों में विविध संगठनों के माध्यम से काम करते हैं। ये संगठन स्वयंपूर्ण एवं स्वायत्त हैं, संघ का इससे कोई सांगठनिक सम्बंध नहीं है। ये सभी संगठन स्वायत्त हैं। किसी राजनैतिक दल के उपांग नहीं है।
- डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने रा.स्व.संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी (मा.स. गोलवलकर) से विमर्श करते हुये जनसंघ की स्थापना की। श्री गुरुजी ने संघ के तपे-तपाये कार्यकर्ता डॉ. मुखर्जी को दिये, उन्होंने एक भारतीयतावादी स्वतंत्र राजनैतिक संगठन भारतीय जनसंघ के नाम से खड़ा किया, जो आज भारतीय जनता पार्टी के रूप में विद्यमान है।
- जनसंघ की स्थापना के पहले अ.भा. विद्यार्थी परिषद् की

स्थापना हुयी थी। बाकी सभी विद्यार्थी संगठन किसी न किसी राजनैतिक दल के उपांग हैं। अ.भा.वि.प. एक मात्र संगठन है, जो निरन्तर क्रियाशील एवं प्रगति कर रहा है। इसके बोध-शब्द हैं ज्ञान, शील और एकता। इनका नारा है 'आज का छात्र-आज का नागरिक'। जो छात्रों का ट्रेड यूनियन नहीं वरन् व्यापक शिक्षा परिवार में विश्वास करता है। अ.भा.वि.प. को आगे बढ़ाने में श्री यशवंत राव केलकर की निर्णायक भूमिका रही।

- जनसंघ के बाद जो बड़ा संगठन स्थापित हुआ उसका नाम है 'भारतीय मजदूर संघ'। श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी इसके संस्थापक महामंत्री रहे। श्रमिक क्षेत्र में स्थापित वामपंथियों से मजदूर संघ ने जबरदस्त टक्कर ली, नारा लगाया'लाल गुलामी छोड़ कर, बोलो वंदेमातरम् 'चाहे जो मजबूरी हो, हमारी मांग पूरी हो' यह वामपंथियों का गैरजिम्मेदार नारा था। मजदूर संघ ने कहा 'देश के हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम'; भारतीय मजदूर संघ ने देश की अर्थव्यवस्था को एक घोषत्रयी दी 'देश का औद्योगीकरण, उद्योगों का श्रमिकीकरण तथा श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण'। आज भारतीय मजदूर संघ सबसे बड़ा मजदूर संगठन है।
- भारतीय उपासना पंथों की एकात्मता को व्यक्त करने वाला 'विश्व हिन्दू परिषद्' स्वामी चिन्मयानंद जी के संदीपनी आश्रम में स्थापित हुआ। दादा साहब आपटे ने इस संगठन को प्रारंभिक दौर में सम्भाला, आज श्री अशोक सिंहल के नेतृत्व में यह संगठन कार्य कर रहा है।
- शिक्षा के क्षेत्र में संघ से स्वयंसेवकों ने बड़ा भारी काम किया है 'विद्याभारती' आज भारत में सर्वाधिक विद्यालयों को संचालित करनेवाला संगठन है। श्री लज्जाराम तोमर इसके प्रथम संगठन मंत्री थे। महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के शिक्षकों में 'शैक्षिक महासंघ' के नाम से संगठन काम करता है तथा शिक्षा की तत्वमीमांसा के लिये 'शिक्षण मंडल' काम करता है।
- रंगकर्म एवं कला के क्षेत्र में 'संस्कार भारती' तथा बुद्धिजीवियों की संस्थाओं में समन्वय स्थापित करने वाली 'प्रज्ञा भारती'

देश में कार्यरत है। भारतीयता परक इतिहास लेखन की दृष्टि से 'इतिहास संकलन समिति' कार्य करती है तथा साहित्यकारों को एक मंच पर लाने का कार्य 'भारतीय साहित्य परिषद' करती है।

- भारत विकास परिषद्, अधिवक्ता परिषद्, लघु उद्योग भारती, नेशनल मेडिकल आर्गेनाइजेशन (एन.एम.ओ.), आरोग्य भारती आदि संगठन विभिन्न प्रवृतियों को संचालित करते हैं। ग्राम विकास एवं अनुसंधान के क्षेत्र में 'दीनदयाल शोध संस्थान' एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में 'हिन्दुस्तान समाचार' अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।
- वनवासी क्षेत्र में 'वनवासी कल्याण आश्रम' का व्यापक संगठन है। विविध शिक्षण चिकित्सा एवं सेवा प्रकल्प इसके माध्यम से चलते हैं। दूर-दराज के कठिन क्षेत्रों में 'एकल विद्यालय' का बड़ा भारी नेटवर्क है।
- सेवा के क्षेत्र में विविध संगठनों के माध्यम से स्वयंसेवक काम करते हैं। किसी भी प्राकृतिक या अन्य आपदा के समय स्वयंसेवक तत्परता से सेवा कार्यों में लगते हैं। चाहे उड़ीसा में तूफान हो चाहे आन्ध्र में, चाहे कश्मीर में बाढ़ हो चाहे उत्तराखण्ड में, चाहे सुनामी हो या भूकम्प स्वयंसेवक सबसे पहले पहुंचनेवाले सेवाभावी लोगों में होते हैं। 'सेवा भारती' गरीब बस्तियों में लक्षावधि प्रकल्प संचालित करती है।
- आर्थिक क्षेत्र में भारतीय मजदूर संघ के अलावा दत्तोपंत ठेंगड़ी की प्रेरणा से भारतीय किसान संघ की स्थापना हुयी तथा जब भू-मण्डलीकरण के नाम पर भारत में आर्थिक साम्राज्यवाद अपना पैर पसार रहा था तब ठेंगड़ीजी के नेतृत्व में ही 'स्वदेशी जागरण मंच' की स्थापना हुयी।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पुरुषों का संगठन है, इसी प्रकार का संगठन महिलाओं के लिये भी होना चाहिये अतः 'राष्ट्र सेविका समिति' की स्थापना हुयी।
- आज देश में कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां भारतीय संस्कृति के अधिष्ठान पर कोई न कोई संगठन कार्य न कर रहा हो। जिन संगठनों के नाम इस पत्रक में आये हैं, ये प्रमुख संगठन हैं। प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तर पर बहुत सी

संस्थायें, इस विचार से कार्य करती हैं। समाज राज्यानुगामी नहीं वरन् स्वायत्त होना चाहिये ये सभी संगठन भी स्वायत्त हैं। संघ का इनसे सांगठनिक नहीं वैचारिक संबंध है। अतः इसे 'संघ विचार परिवार' कहा जाता है। आपसी विमर्श से ये सब कार्य करते हैं, परिणामतः आज संघ विचार परिवार उन सबके लिये भय का कारण बन गया है जो भारत में पृथकतावाद या विदेशी विचारों के एजेंट हैं। ये सब संगठन अपनी पार्टी के हिस्सा नहीं हैं। वरन् अपनी पार्टी उस विचार का हिस्सा है, जिनके आधार पर ये संगठन संचालित होते हैं। सब की प्रेरणा का एक ही श्रोत है, 'भारत माता की जय' एवं 'वंदे मातरम्'।

❖❖❖

देश के सम्मुख चुनौतियां

- भारत बाहरी और आंतरिक दोनों मोर्चों पर गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है।

बाहरी चुनौतियां

- चीन और पाकिस्तान, दोनों के साथ हमारा सीमा विवाद है और ये दोनों पड़ोसी देश हमारे लिए सीमा व घरेलू मोर्चों पर परेशानियां खड़ी कर रहे हैं।
- चीन और पाकिस्तान दोनों परमाणु संपन्न देश हैं और इन दोनों ने एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरते भारत को चोट पहुंचाने के उद्देश्य से आपस में गहरे राजनयिक संबध स्थापित कर लिए हैं।
- दोनों में से कोई भी देश पहले परमाणु अस्त्र के इस्तेमान नहीं करने की घोशणा करने को तैयार नहीं है, जबकि भारत इसके लिए वचनबद्ध है।

पाकिस्तान

- पाक प्रायोजित आतंकवाद के कारण भारत में हजारों लोगों की जानें जा चुकी हैं और अभी भी हमारे देश में पाकिस्तान द्वारा चलाए जा रहे सैकड़ों आतंकवादी मॉडल सक्रिय हैं। पूरा विश्व आज जान चुका है पाकिस्तान आतंकवादियों को उदग्म स्थल है और यहां से पूरी दुनिया में आतंकियों को भेज रहा है। भारतीय सीमा के आस-पास आज भी पाकिस्तान आतंकवादी कैंप चला रहा है। वह दाउद इब्राहिम और टाइगर मेनन जैसे भारत विरोधी आतंकवादियों को न सिर्फ अपने यहां पनाह दे रहा है, बल्कि वह शांति प्रक्रिया के लिए हुए हर तरह के समझौते से मुकर जा रहा है।
- पाक प्रायोजित आतंकवाद मॉड्यूल पर सतकर्ता बरतने, 26/11 हमले के गुनहगारों को भारत लाने जम्मू कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा चलाई जा रही आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने जैसी कई चुनौतियों के कारण भारत को काफी बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है। हमारा राश्ट्रीय संपत्ति यूं ही जाया हो रही है।

- भारत द्वारा पाकिस्तान को लगातार आर्थिक सहयोग देने और मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा दिए जाने के बावजूद पाकिस्तान कभी भारत को यह दर्जा नहीं देता, जिसके कारण भारत का व्यापार बाधित होता है।

चीन

- चीन के साथ हमारा सीमा विवाद काफी समय से चला आ रहा है। ऐसा लगता है कि चीन इसे हल करने का इच्छुक ही नहीं है। यद्यपि 1962 के बाद भारत चीन सीमा पर कभी कोई गोली बारी नहीं हुई और ना ही कोई विशेश तनाव ही फैला, उसके बावजूद चीन लगातर हथियारों का जखीरा भारतीय सीमा पर इकट्ठा कर रहा है और हमेशा हमारे विरुद्ध एक प्रतिस्पर्धा का माहौल बनाए हुए है। अभी हाल ही में लखवी के मामले में यूएनए में आए प्रस्ताव पर चीन ने पाकिस्तान का ही साथ दिया।
- यद्यपि भारत ने चीन के साथ हमेशा आर्थिक सहयोग की भावना रखी, लेकिन चीन लगातार हमारी आर्थिक हितों को अनदेखा करता रहा, राजनयिक स्तर पर भी और हिंद महासागर के एक देश के रूप में भी।
- चीन लगातार अपनी नौसेना को मजबूत कर रहा है और भारत के सामुद्रिक हितों के लिए खतरा उत्पन्न कर रहा है। यह हमारे लिए एक और बड़ी चिंता की बात है।
- चीन सीमा पर सड़कों को जाल बिछा कर एक तरह से पाकिस्तान और श्रीलंका को मदद कर रहा है। इससे हिंद महासागर में भारत के प्रभुत्व को कड़ी चुनौती मिल रही है।
- जब से केंद्र में भाजपा की सरकार आई है, तब से भारत सोंची समझी रणनीति के तहत नेपाल, भूटान, म्यामार, बांग्लादेश और श्रीलंका के साथ क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने का लगातार प्रयास कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी की इन देशों की यात्रा से एक उचित वातावरण भारत के पक्ष में बना है। भारत अब चीन और पाकिस्तान द्वारा संभावित खतरे से

निबटने के लिए अपनी सुरखा और खुफिया स्रोतों को मजबूत करने के लिए आवश्यक कदम असरदार तरीके से उठा रहा है।

आंतरिक चुनौतियां

माओवाद

- पाकिस्तान और चीन से लगातार सहायता प्राप्त कर रहे माओवादी भारत के आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बन गए हैं।
- माओवादियों द्वारा की गई हिंसा के कारण अब तक हजारें सुरक्षा बल के जवान और आम नागरिक मारे जा चुके हैं। भारत के लगभग 200 जिलों में फैले अतिवामपंथ विचारधारा के इन अतिवादियों के कारण देश का विकास अवरुद्ध हो रहा है।
- ये माओवादी अब पूर्वोत्तर राज्यों के उग्रवादी समूहों के साथ सांठ-गांठ कर साझा हमले की कोशिश कर रहे हैं।
- पूर्वोत्तर में सक्रिय अलगाववादी संगठन म्यांमार और बांग्लादेश के अपने गुप्त ठिकाने से भारत विरोघी गतिविधियां चला रहे हैं और उग्रवादी हमले का संचालन कर रहे हैं।
- जुलाई, 2015 ने भारत की सेना ने इन अलगाववादी संगठनों को मुंहतोड़ जवाब दिया और म्यांमार में घुसकर इनसे बदला लिया और इनके ठिकाने ध्वस्त किए।

जबरन धर्मांतरण

- धन और बल के सहारे मसीही और जिहादी गतिविधियों चलकार देश की जनसांख्यिकी ढ़ांचे को बिगाड़ने का शडयंत्र भारत में कई वर्शो से चल रहा है। यह हमारे लिए एक गंभीर आंतरिक खतरा है।
- धर्मांतरण के खेल में देश के बाहर की एजेंसियां भी लगी हैं, जो मुक्त हाथ से धन का और गुंडों का प्रयोग कर रही हैं।
- जबरिया धर्मांतरण एक गंभीर विशय है, क्योंकि इससे हमारा भाईचारा और सामाजिक सौहार्द बिगड़ने की आशंका है।
- धर्मांतरण हमारे यहां राजनैतिक रूप से एक बेहद संवेदनशीन मुद्दा है, क्योंकि भारत की कई राजनैतिक पार्टिया या तो धर्म परिवर्तन को बढ़ावा दे रही हैं, या फिर खामोश समर्थन दे रही हैं।
- हमारे कई राज्यों में धर्मांतरण इतना ज्यादा हुआ है कि वहां कि जनसांख्यिकी ढांचा पूरी तरह बदल गया है। ऐसे राज्यों के लोगों में आक्रोश और गुस्सा है जो कभी भी फट सकता है।

गैर सरकारी संगठनों का जाल

- भारत में हजारों ऐसे गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) सक्रिय हैं जिन्हें विदेशों से इस बात के लिए ही पैसा मिलता है कि वह यहां के माहौल को बिगाड़े, आर्थिक प्रगति में बाधा पहुंचाएं और खासकर वनवासी क्षेत्रों के लोगों को गुमराह करें।
- केंद्र की सत्ता में आने के बाद भाजपा ने इस मामले में एक कठारे निर्णय लेते हुए फोर्ड फाउंडेशन, ग्रीनपीस क्म्यूनिलिज्म कॉमबैट जैसे 4000 एनजीओं को न सिर्फ काली सूची में डाला, बल्कि यह भी निश्चित किया कि विदेशों से जिन एनजीओं को पैसे मिलते हैं उनके कामकाज पर गहरी नजर भी रखी जाए।
- इसके पहले कई ऐसी एनजीओ थी जिन्होंने देश की विकास परियोजनाओं को ही बाधित करने की चेश्टा की, उनमें वनवासी क्षेत्रों में सड़क निर्माण नहर निमार्ण और खनिज संपदा तक पहुंचने का काम भी शामिल था। कोदई कोनाल, उड़ीसा और पूर्वोत्तर राज्यों की परियोजनाओं का विरोध इसका ताजा उदाहरण है।

आर्थिक चुनौतियां

- वर्श 2015 का सामाजिक-आर्थिक एवं जातिगत जनगणना सर्वेक्षण यह बताता है कि देश की एक बहुत बड़ी आबादी किस तरह से गरीबी की जिंदगी जीने को विवश है।
- 60 साल के कांग्रेस के शासन में 60 फीसदी से अधिक ग्रामीण आबादी बदहाली की स्थिति में है।
- देश की लगभग 75 फीसदी आबादी की मासिक आय 5000 रुपये से भी कम है।
- 30 फीसदी आबादी के लिए आज भी खेती ही एक मात्र

जीविका का साधन है।

- परंतु 56 फीसदी ग्रामीण आबादी के पास आज भी कोई भूमि नहीं है।
- लाखों लोग भीख मांग कर गुजारा कर रहे हैं।
- 13 फीसदी से अधिक लोग आज भी कच्चे मकान में रहते हैं।
- 11 करोड़ लोग फटेहाली की स्थिति में हैं।
- अर्थव्यवस्था से संबंधित सामाजिक मुद्दे
- भारत में कुपोषित महिलाओं और बच्चों की संख्या काफी अधिक है।
- प्रसव के दौरान मृत्यु की दर भी भारत में काफी अधिक है जो यह बताती है कि लोगों तक स्वास्थ्य सुविधाएं अभी भी नहीं पहुंच रही हैं।
- भ्रूण हत्या एवं शिशु मृत्यु के कारण लैंगिक अनुपात में बालिकाओं की संख्या कम होती जा रही है। हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश में यह औसत खतरनाक स्थिति तक पहुंच गई है।
- इस लैंगिक असंतुलन को दूर करने के लिए भाजपा ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं का अभियान चलाया है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाएं आज भी दूर की कौड़ी बनी हुई हैं।
- हमें यह ध्यान रखना होगा कि आधुनिकीकरण का मतलब पश्चिमीकरण नहीं है।
- वैश्वीकरण के नाम पर भारत के उद्योगों और यहां की परंपरा व संस्कृति को दाव पर लगाया जा रहा है।
- भारत को विदेशी सामानों का गोदाम बनाने के कारण हमारे परंपरागत उद्योग व लघु उद्योग खतरे में पड़ गए हैं।
- परंपरागत रूप से भारत के दस कुशल समुदाय जिन्हें हम सामूहिक रूप से विश्वकर्मा कहते थे और जिनमें बढ़ई, बुनकर, सुनार, लुहार, कुम्हार, चर्मकार,, निमार्ण मिस्त्री और ठठेरा कहते थे, उनके हाथ से काम छिन रहे हैं और अब वे किसी और रोज गार की तलाश में भटकने को मजबूर हो गए हैं। आवश्यकता है कि फिर से इन्हें प्रशिक्षित किया जाए

और भारत सरकार के स्कील इंडिया कार्यक्रम में इन्हें शामिल किया जाए।

सामाजिक मुद्दे

- भाजपा सरकार ने स्वच्छ भारत के लिए क्लीन इंडिया मिशन की शुरूआत की है।
- स्वच्छता के जरिए कई जानलेवा बीमारियों से हम बच सकते हैं।
- गंगा सफाई योजना हमारे देश के लिए गर्व की बात है।
- इस अभियान को देश की अन्य नदियों से जोड़ने की जरूरत है।
- हमारे ऐतिहासिक और पौराणिक शहरों को अतिक्रमण और गंदगी से सुरक्षित रखने की आवश्यकता है।
- ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व के भवनों और स्थलों की सुरक्षा के प्रति स्थानीय लोगों को जागरूक करना आवश्यक है।
- देश के प्रत्येक नागरिक के लिए स्वच्छ जल पीने के लिए मुहैया हो
- हर घर बिजली और स्वच्छ पानी भाजपा सरकारों का लक्ष्य हो
- देश को शत प्रतिशत साक्षर बनाना भी भाजपा का लक्ष्य है।
- समस्याओं का समाधान सिर्फ कानून बना देने भर से नहीं हो सकता, बल्कि इस पर असरदार तरीके से अमल और जनता की भागीदारी सुनिश्चित करना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

❖❖❖

वर्ग गीत

अरूण गगन पर महाप्रगति का, अब फिर मंगल गान उठा।
करवट बदली अंगड़ाई ले, सोया हिन्दुस्थान उठा।।
सौरभ से भर गयी दिशायें, अब धरती मुसकाती है,
कण–कण गाता गीत गगन की, सीमायें दुहराती हैं,
मंगल गान सुनाता सागर, गीत दिशायें गाती हैं,
मुक्त गगन में राष्ट्र पताका, लहर लहर लहराती है,
तरूण रक्त अब लगा खौलने, हृदयों में तूफान उठा।
करवट बदली अंगड़ाई ले, सोया हिन्दुस्थान उठा।। 1 ।।

रामेश्वर का जल अंजलि में, काश्मीर की सुन्दरता,
काम रूप की धूलि द्वारिका, की पावन प्यारी ममता,
बंग देश की भक्ति भावना, महाराष्ट्र की तन्मयता,
शौर्य पंचनद विजयी विश्व में, राजस्थानी प्रबल क्षमता,
केन्द्रित कर निज प्रखर तेज को, फिर भारत बलवान उठा।
करवट बदली अंगड़ाई ले, सोया हिन्दुस्थान उठा ।। 2 ।।

बिन्दु बिन्दु जल मिलकर बनती, प्रलयंकर जल की धारा,
कण–कण भू–रज मिल कर करते, अंधकारमय जग सारा,
कोटि–कोटि हम उठें उठायें, भारतीयता का नारा,
बढ़ें विश्व के बढ़ते कदमों ने फिर हमको ललकारा,
उठे देश के कण–कण से फिर जन–जन को आह्वान उठा।
करवट बदली अंगड़ाई ले, सोया हिन्दुस्थान उठा।।
अरूण गगन पर महाप्रगति का, अब फिर मंगल गान उठा।
करवट बदली अंगड़ाई ले, सोया हिन्दुस्थान उठा।। 3 ।।